हाथ

मैं अपने जिस्म को
हाथों में संभाल सकता हूं
मेरे हाथ जब महबूब का हाथ मांगते हैं
पकड़ने को तो मैं चांद भी हाथों में पकड़ना चाहता हूं
मेरे हाथों को लेकिन
सींखचों का स्पर्श बिना शिकवा मुबारक है
साथ ही कोठरी कें इस अंधेरे में
मेरे हाथ, हाथ नहीं होते
सिर्फ थप्पड़ होते हैं...
हाथ मिलाने पर पाबंदी सिसकती रह जाती है
जब अचानक कोई साथी सामने आता है
हाथ खुद-ब-खुद
मुक्का बनकर लहराने लगते हैं...
दिन हाथ खींचता है
तो रात हाथ बढ़ाती है
कोई हाथ छीन नहीं सकता इन हाथों का सिलसिला
या कभी दरवाज़ों की पांचों की पांच सलाखें
बन जाते हैं कोई बड़े प्यारे हाथ-
एक हाथ मेरे गांव के बुजुर्ग तुलसी का
जिसकी उंगलियां
वर्षों को गूंथ-गूंथकर थीं इतनी थकी
कि मुझे पढ़ाते हुए
उर्दू के पहले सबक
बन जाता था उससे अलिफ का 'त'
एक हाथ जगीरी दर्जी का
जो जब भी मुझे जांघिया सिलकर देता
तो लेता था पारिश्रमिक
मेरे कान मरोड़ने में
और यह जानते हुए भी कि मैं उलट करने से
बाज नहीं आऊंगा
नसीहत देता था-
पशुओं के साथ पोखर में न घुसा कर
बचकाने खेल खेलने से बाज आएगा या नहीं ?
एक हाथ प्यारे नाई का
जो काटते हुए मेरे केश
डरता रहता था मेरे सिख घरवालों से...
एक हाथ मरो दाई का
जिसके हाथ में था कोई रिकार्ड
जो सदा राग गाता था-
'जीते-जागते रहो बेटे!'
और एक हाथ दरसू दिहाड़िए का
जिसने पी ली आधी सदी
रखकर हुक्के की चिलम में...
मुझसे कोई छीन नहीं सकता
इन हाथों का सिलसिला
हाथ जेबों में हों या बाहर
हथकड़ी में हों या बंदूक के कुंदे पर
हाथ, हाथ होते हैं
और हाथों का एक धर्म होता है
हाथ यदि हों तो
जोड़ने के लिये ही नहीं होते
न दुश्मन के सामने खड़े करने के लिए ही होते हैं
यह गर्दनें मरोड़ने के लिए भी होते हैं
हाथ यदि हों तो
हीर के हाथ से चूरी पकड़ने के लिए ही नहीं होते
सैदे की बारात रोकने के लिए भी होते हैं
कैदो की कमर तोड़ने के लिए भी होते हैं
हाथ श्रम करने के लिए ही नहीं होते
शोषक हाथों को तोड़ने के लिए भी होते हैं...
जो हाथों का धर्म भंग करते हैं
जो हाथों के सौंदर्य का अपमान करते हैं
वे पंगु होते हैं
हाथ तो होते हैं सहारा देने के लिए
हाथ तो होते हैं हुंकारा भरने के लिए।

– पाश

रवीश की पाती राम जेठमलानी के नाम

आदरणीय राम जेठमलानी जी,

सोचा आपको चिट्ठी लिखी जाए। मुझे पता है ख़त लिखने के मामले में मैं आपका मुकाबला नहीं कर पाऊंगा। आपके प्रति घटता हुआ सम्मान आज समाप्त हो जाता है। अंग्रेज़ी में आपके वाक्य का हिन्दी तर्जुमा जम तो नहीं रहा पर काश आपकी तरह लिखने का फ़न हासिल होता। बेशक आप प्रतिभाशाली हैं मगर प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी को लिखे ख़त से लगता है कि आप मोहब्बत भी कर सकते हैं। आपका दिल टूट गया है। एक टूटे हुए आशिक की तरह आपने उचित ही व्यवहार किया है। वकालत के लिए देश दुनिया में शोहरत हासिल करने वाला 91 साल की उम्र में वैसे ही टूट जाता है जैसे 17 साल की उम्र में कोई आशिक।

17 साल की उम्र में ही आपने कराची के कॉलेज से वकालत की डिग्री ले ली थी, सोचिये आज के दौर में हासिल की होती तो क्या पता आप भी जितेंद्र सिंह तोमर की तरह किसी फ़ैज़ाबाद या मलीहाबाद के लिए ले जाए जा रहे होते। किसकी मजाल कि राम की ऐसी हालत कर दे। मालूम नहीं कि आपने राजीव गांधी से पहले किसी को चिट्ठी लिखी या नहीं, लेकिन इसी कारण मैं आपके बारे में जान पाया। ज़ाहिर है तब बहुत छोटा रहा होगा। जब टीवी पर देखा कि पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के घर के बाहर कुछ लोगों ने आपके साथ हाथापाई की, तब बहुत गुस्सा आया था। पर आपको नहीं आया।

इतिहास जब पढ़ेगा तो देखेगा कि आपने धारा के खिलाफ़ जाकर दो.दो प्रधानमंत्रियों की हत्या के आरोपियों का केस लड़ा। यह वाकई एक साहसिक कदम था। आज कई वकील तो आतंकवाद के आरोपियों का केस नहीं लड़ने जाते, बल्कि जो जाता है उसकी भी पिटाई कर देते हैं। आपके बारे में इतिहास यह भी देखेगा कि वही जेठमलानी आगे चलकर जेसिका लाल मर्डर केस में मनु शर्मा की वकालत करते हैं। शेयर बाज़ार में हुए घोटाले के आरोपी हर्षद मेहता, डान हाजी मस्तान, कांग्रेस नेता अजीत जोगी के बेटे अमित जोगी का केस लड़ते हैं। सोहराबुद्दीन केस में अमित शाह का बचाव किया। 2.जी केस में कणिमोई का मुकदमा लड़ा। लालू प्रसाद यादव का मुकदमा लड़ा।

इस बायोडेटा को पढ़ते हुए अगर किसी इतिहासकार ने लिखा कि बाद में जेठमलानी की छवि ऐसी बन गई कि वे किसी भी केस से बड़े लोगों को बचा सकते हैं। मैंने यह सारी जानकारी विकीपीडिया से ली है। ज़ाहिर है आपने गिनती के मुकदमे तो लड़े ही नहीं पर विकीपीडिया में होना चाहिए था कि राम जैसे वकील ने कितने ग़रीब और कमज़ोर लोगों का भी मुकदमा लड़ा और उन्हें इंसाफ़ दिलाया। मुझे यकीन है कि आपने ग़रीबों मज़लूमों का भी केस लड़ा ही होगा।

इसमें कोई दो राय नहीं कि मैं आपकी अंग्रेज़ी और वकालत का क़ायल रहा हूं। मुझे अंग्रेज़ी पसंद नहीं, लेकिन अच्छी अंग्रेज़ी पसंद है। वकालत की पढ़ाई करने वाले दोस्तों से कहा करता था कि यार वकील बनना तो नानी पालखीवाला या राम जेठमलानी की तरह। वह भी क्या दौर रहा होगा, जब आपातकाल के खिलाफ़ आप लड़ा करते थे। आपके खिलाफ़ मुकदमा हुआ तो पालखीवाला और 300 वकीलों ने आपका केस लड़ा। लगता था कि देश मे वकीलों की कोई पहचान है तो वह राम जेठमलानी है। आपके असर के कारण कई वकीलों का सम्मान नहीं कर सका क्योंकि मुझे उनमें राम जेठमलानी नहीं दिखा। फ़िल्मों में तो कोई भी काला चोंगा पहनकर मेरे क़ाबिल दोस्त, क़ाबिल दोस्त बोलने लग जाता है, लेकिन असली ज़िंदगी में राम की जगह कोई और नहीं ले सका।

कांग्रेस के विरोध ने आपको स्वाभाविक रूप से ग़ैर कांग्रेस पाले की तरफ़ धकेले रखा। बहुत दिनों तक आपने चिट्ठी लेखन बंद कर दिया। जिस वाजपेयी ने आपको मंत्री बनाया, उन्हीं के ख़िलाफ़ 2004 में चुनाव लड़ने चले गए। बीजेपी छोड़ दी तो बीजेपी में आ गए। 2012 में आपने ही तो तब के बीजेपी अध्यक्ष नितिन गडकरी को ख़त लिख दिया कि बीजेपी यूपीए के भ्रष्टाचार पर चुप क्यों हैं। आप निकाल दिए गए। अभी तक अंदर नहीं आ सके। इसके बावजूद आपकी प्रीति प्रधानमंत्री मोदी से बनी रही। दो व्यक्ति की इस प्रीति में क्या हुआ कोई नहीं जानता। ख़त का जवाब तो कभी आएगा नहीं इसलिए कुछ कहना मुश्किल है।

दरअसल राजनीतिक भ्रष्टाचार के मामले में आप दल देखकर बोलते हैं और फिर उन्हीं दलों के नेताओं के केस भी लड़ते हैं। कई बार क्यों लगता है कि आपका बोलना किसी ख़ास मौके के हिसाब से होता है। आप प्रशांत भूषण भी नहीं है, वैसे मुझे नहीं पता कि प्रशांत ने कभी घोटालेबाज़ों और हथकंडे करने वाले लोगों का केस लड़ा है या नहीं, मगर कणिमोई, लालू और जयललिता का केस लड़ते हुए भी आप प्रधानमंत्री में यकीन बनाए रखते हैं कि वे भ्रष्टाचार के लिए कुछ करें, इसकी सराहना की जानी चाहिए। आपने एतराज़ किया कि जो केंद्रीय सतर्कता आयुक्त नियुक्त हुए हैं उनका रिकॉर्ड दाग़दार है। कौन जाने आप उन्हीं चौधरी साहब का केस लड़ते हुए नज़र आ जाएं।

दरअसल राम आपकी प्रतिभा भ्रष्टाचार के खिलाफ़ लड़ने वालों के कभी काम नहीं आ सकी। उनके ही काम आई जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे। राजनीतिक समीकरणों के बाहर आप खुद को कभी देख नहीं पाए। आपने वकालत से राजनीति को साधा, राजनीति ने कई और वकील खड़े कर लिए। आप क़ाबिल वकील तो हैं मगर क्रूसेडर नहीं हैं। चतुराई आपकी पहचान हो गई है। मुझे संतोष है कि आपको इन बातों से कोई फ़र्क नहीं पड़ता। कम से कम मीडिया में राम बेबाक ही बोलते हैं। दरअसल आप हमेशा बेबाक नहीं होते। तब बेबाक होते हैं जब वही राजनीति अवाक कर देती है जिस पर आप जैसा मासूम भरोसा करने लगता है। इसके बावजूद आपकी आवाज़ में खनक और ठनक मुझे काफी प्रभावित करती है। रौब से आप बोलते हैं। रौब के सामने आप नहीं भी बोलते हैं।

91 साल की उम्र में भी आपका बेहतर स्वास्थ्य देश में कानून की पढ़ाई करने वाले लाखों छात्रों के लिए प्रेरणा का काम करेगा। वे समझ सकेंगे कि प्रतिभा का जेठमलानीय उपयोग से शोहरतए साधन और सत्ता सब हासिल किया जा सकता है। मैं शुक्रगुज़ार हूं कि आप चिट्ठी लिखते हैं। यह चिट्ठी ही वो स्पेस हैं जहां मेरे पसंदीदा राम दिख जाते हैं। एक गुज़ारिश है कि आप एक चिट्ठी उस राम जेठमलानी को भी लिखिए जो अपने जेठमलानी होने और न हो पाने का राज़ जानता है। दोनों के कश्मकश को आसानी से जी लेता है। यह भी लिखिएगा कि राम जेठमलानी कुछ मुद्दों पर बोल देते या मुकदमा लड़ लिए होते तो देश की राजनीति का इतिहास क्या होता। कुछ लोगों का मुकदमा लड़ने से मना कर देते तो आज देश की राजनीति कहां होती।

2004 में जब आप लखनऊ से वाजपेयी के खिलाफ़ चुनाव लड़ रहे थे, तो एक बेकार से मकान की पहली मंज़िल पर मैंने आपका इंटरव्यू किया था। मेरी आखिरी पंक्ति पर आप मुस्कुरा कर रह गए थे। शुक्रिया राम जेठमलानी। आपने वकालत में जो कमाया, सियासत में गंवा दिया। मुझे आपकी न हंसने सी वह हंसी आज भी याद है। मैं आज भी नए छात्रों से कहूंगा कि वकील बनना तो राम जेठमलानी जैसा मगर वकालत उनके जैसा मत करना।

आपका
रवीश कुमार

नया थानेदार

थाने में हडकंप मचा हुआ था। नए थानेदार की नियुक्ति हुई थी, जो शाम तक थाने का चार्ज लेने वाला था। वह पहले एक छोटे से थाने का इंजार्ज था। नए थानेदार का आना कोई नई बात नहीं थी। नई बात यह थी कि थानेदार के बारे में कहा जा रहा था कि वह बहुत कडक है। न खाता है, न खाने देता है। न खुद सोता है और न दूसरों को सोने देता है। खुद भी अनुशासन में रहता है, दूसरों से भी यही उम्मीद करता है। कहा जा रहा था कि 18 घंटे रोज काम करता है। बहुत स्टाइलिश है। महंगे कपडे पहनने का शौकीन है। सेल्फी डिप्लोमेसी से काम लेता है। बाकी सब ठीक था, लेकिन चिंता की बात न खाता है, न खाने देता है, वाली थी।

थानेदार की विशेषता यह भी थी कि उसकी मर्जी के बगैर क्षेत्र में हुई वारदात की रिपोर्ट नहीं लिखी जाती थी। वारदात की रिपोर्ट दर्ज करने में उसका यकीन नहीं था। इससे उसके क्षेत्र में अपराध का ग्राफ निम्न स्तर पर आ गया था। यही वजह थी कि जिले में उसके थाने को आदर्श थाना कहा जाता था। वह थाना एक मॉडल की तरह था, जिसका प्रचार वह खुद या अपने आदमियों से कराता रहता था। इससे लोगों में उसके प्रति विश्वास जम गया था। हर थाने की जनता चाहती थी कि वह हमारे क्षेत्र का थानेदार बने।

वह वक्त भी आ गया, जब थानेदार ने एक शानदार महंगी गाडी से थाने में प्रवेश किया। उस वक्त उसके बदन पर बेशकीमती सूट था। हाथ में सबसे महंगा स्मार्टफोन था। थाने का स्टाफ यह देखकर चौंक गया कि जिसकी गाडी में और जिसके साथ थानेदार आया था, वह शहर का नामी बिल्डर था, जो वास्तव में एक भूमाफिया है। साथ में भूमाफिया की पत्नी भी थी। थानेदार स्टॉफ का सलाम लेता हुआ अपने आफिस के सामने पहुंचा और कुछ क्षण बाद ऑफिस के गेट को झुककर पूरी श्रद्धा से नमन किया। थानेदार ने ऑफिस में प्रवेश किया। भूमाफिया ने थानेदार की कमर पर हाथ रखकर अपने तरफ खींच लिया। थानेदार ने बढकर भूमाफिया की पत्नी के दोनों हाथ पकड लिए। थानेदार ने अपने स्मार्ट फोन से भूमाफिया और और उसकी पत्नी के साथ एक सेल्फी ली और उसे फौरन ही सोशल मीडिया पर भेज दिया।

थानेदार, भूमाफिया और उसकी पत्नी बाहर आए। थोडी देर तक परिचय लेने का दौर चला। थानेदार ने भूमाफिया का अपने स्टॉफ से परिचय कराते हुए कहा, इनका बडा इसरार था कि मैं इनके क्षेत्र में थानेदार बनकर आऊं। इसके लिए इन्होंने बहुत मेहनत की है। मेरी खुशकिस्मती है कि इनकी मेहनत की वजह से मैं जिले के सबसे बडे थाने का इंचार्ज बना हूं। इनकी इस क्षेत्र में एक बहुत बडी कालोनी बन रही है। कुछ लोग उसमें अडंगा लगा रहे हैं। आप समझ ही गए होंगे कि मैं क्या कहना चाहता हूं पिछले थानेदार के कार्यकाल की तरह नहीं चलेगा कि स्टॉफ अपनी मनमानी करता रहा और वह मौनी बाबा बने रहे। इस थाने में मेरी मर्जी के बगैर कुछ नहीं होगा। अगर मेरी वजह से आप पर आंच आएगी तो आपका कुछ नहीं बिगडेगा। लेकिन बात ज्यादा बिगडेगी, तो मैं भी मौनी बाबा बनने में देर नहीं लगाऊंगा।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. पीपीएच बुक शॉप, नियर सैन्ट्रल लाईब्रेरी, न्यू कैम्पस,जे.एन.यू।
10. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब